आज की पीढ़ी
और
वीर नारायण सिंह की वसीयत

– शंकर गुहा नियोगी –

शहीद शंकर गुहा नियोगी यादगार समिति
लोक साहित्य परिषद

★ छत्तीसगढ़ माईन्स श्रमिक संघ द्वारा सन ७९ के वीर नारायण सिंह दिवस के अवसर पर निकाले गए संकलन "छत्तीसगढ़ का किसान युद्ध का पहला क्रांतिकारी शहीद वीर नारायण सिंह" में प्रथम प्रकाशित।

★ दूसरा प्रकाशन : १९ दिसम्बर, ८३, वीर नारायण सिंह दिवस में "छत्तीसगढ़ के पहले क्रांतिकारी शहीद वीर नारायण सिंह लाल जोहार" के नाम से।

★ पुन : मुद्रण १९ दिसम्बर, १९९२, वीर नारायण सिंह दिवस

सहायता राशि : २ रुपये

प्रकाशक : लोक साहित्य परिषद
द्वारा छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा
सी. एम. एस. एस. आफिस
दल्ली राजहरा – ४९१२२८
दुर्ग (मध्यप्रदेश)

मुद्रक : बजाज प्रिन्टर्स
मेन रोड, दल्ली राजहरा
दुर्ग (मध्यप्रदेश)

आज की पीढ़ी
और
वीर नारायण सिंह का वसीयत

शंकर गुहा नियोगी

सोनाखान के वीर शहीद नारायण सिंह की जन्म भूमि एवं कर्म भूमि एवं वर्तमान में क्रान्ति की तीर्थभूमि, सोनाखान जाकर उनके परिवार से मुलाकात करने की जिम्मेदारी संस्था की ओर से मुझे एवं सहदेव साहू को सौंपी गयी। सोनाखान वर्तमान में छत्तीसगढ़ के पूर्व की ओर रायपुर जिले की तहसील बलौदा बाजार में स्थित हैं। जंगलों के बीच एक आदिवासीबहुल गांव है। कँवर, धनहार, बिझवार एवं गोंड़ जाति के लोग इस बस्ती में रहते है। सोनाखान पंचायत भी है। सोनाखान पंचायत में भुसरी पाली, कर्सान्दी, महकम, बंगलापाली गांव हैं।

हम लोग रायपुर से बलौदाबाजार के लिए रवाना हुए। बलौदाबाजार के बाद कसडोल जाना था। कसडोल जाने के लिए विशाल महानदी को पार करते हमें परेशानियों का सामना करना पड़ा और इस तरह हम कसडोल पहुँचे। यह वही कसडोल है जहां के व्यापारियों के विरूद्ध सन् १८५६ में शहीद वीर नारायण सिंह ने घोर संघर्ष किया था। आज आजादी के ३२ साल बाद भी वीर नारायण सिंह के परिवार के लोग नितान्त गरीबी में दिन व्यतीत कर रहे है, परन्तु वह व्यापारी घराना जिसने शहीद नारायण सिंह के सपनों को चकनाचूर करने के इरादे से वीर नारायण सिंह को कारागार में पहुँचा दिया था, आज भी कसडोल में गगनचुम्बी इमारत बनाकर इठला रहा है तथा गरीब किसानों का बेरहमी से शोषण कर रहा है। इस व्यापारी घराने के लोग आज कांग्रेसी सफेदपोश नेता बने हुए हैं।

सोनाखान जाने के लिए कसडोल होकर ही जाना होगा। हम अपनी यात्रा जारी रखते हुए सुनसान रास्ते से गुजरते हुए कसडोल से आगे निकल पड़े। सामने जोंक नदी मिली जिसे पार कर हम दक्षिण कीं ओर चल पड़े, कुछ दूर जाने के पश्चात जंगली क्षेत्र

प्रारंभ हुआ। अचानक एक स्थान पर हम चलते–चलते ठिठक कर रुक गए। हमने देखा कि वह जगह गिठोला के पास थी, हमें ऐसा प्रतीत हुआ जैसे इस क्षेत्र में पत्थरों की वर्षा हुई है, हमारी दृष्टि जहां भी गई उस ओर पत्थर ही पत्थर दृष्टिगोचर हुए। जहां देखों पत्थर ही पत्थर, छोटे-बड़े, मझोले, पड़े दिखे। हमें ऐसा लगा कि वीर नारायण सिंह की आवाज गूंज रही है– "ठहरो ! देखो जो पत्थर तुम पड़े देख रहे हो, उन्ही पत्थरों से हमने संघर्ष शुरु किया था १२५ साल पहले– जमाखोर एवं अंग्रेजी साम्राज्यवाद के खिलाफ आज भी वही शोषक वर्ग मौजूद है। देखते क्या हो, उठाओ पत्थर हमारा अधूरा संघर्ष, पूर्ण विजय की मंजिल तक ले जाने जिम्मेदारी तुम पर है। भूलो मत नौजवान, नया जमाना बनाने की जिम्मेदारी तुम पर है।"

हम गिंडोला गांव को पार कर सोनाखान के लिए अग्रसर हुए। रास्ते में हम उस महान क्रांतिकारी वीर को अपने साथ महसूस करते रहे। हमें ऐसा लगा जैसे उस क्षेत्र की हवा, झाड़, झरिया क्रांतिवीर के महान संग्राम के मूक दर्शक, आज अचानक महाकोलाहल कर इतिहास की गाथाएँ सुनाने के लिए तत्पर हैं। छत्तीसगढ़ के अन्य जंगलों से सोनाखान का जंगल भिन्न नहीं है। वहां भी सागौन बीजा, करौं, सेन्हा, बेल, आंवला आदि वृक्ष हैं। बीच में एक बनग्राम अर्जुनी पहुंचकर पहली बार हमने शहीद वीर नारायण के नाम से आम किसानों से पूछ-ताछ की। एक गरीब किसान से मैंने पूछा– "नारायण सिंह का नाम सुने हो का जी ?" इस पर उस गरीब किसान ने अपनी मद्धिम आवाज में उत्तर दिया– हम नई जानन।

मैंने फिर पूछा– 'देश बर परान निछावर करैइया महान लड़ाकू नेता के नाम नइ सुने हव तुमन ?' उत्तर मिला– 'अरे, वोहर तो वीर नारायण सिंह रिहिस हादे, वो हा'। उस इलाके में नारायण सिंह को लोग वीर नारायण सिंह के नाम से ही जानते हैं। फिर मैंने जहां–जहां भी वीर नारायण सिंह के बारे में पूछ–ताछ की सब जगह काफी भीड़ जमा हो जाती। लोगों के मन में मैंने एक नया उत्साह देखा, वो सब, कुछ न कुछ बोलने

को तत्पर थे, वीर नारायण सिंह के संग्राम के बारे में कहना चाहते थे। वे इतिहास के बारे में अशिक्षित होने के कारण अनभिज्ञ थे और अधिक बोल नहीं सके. परन्तु भीड़ में खड़े लोगों की मूक आँखें देखने से ऐसा लगा जैसे वीर नारायणसिंह के इतिहास के पन्ने पलटते चले जा रहे हैं। उन पन्नो में वीर नारायण सिंह को कुर्बानी की गाथा हमें पढ़ने को मिली। आदिवासी किसानों की आँखें जैसे जल-जल कर आँखों में प्रतिफलित हो रही हैं- एक क्रान्ति का इतिहास सामन्तवाद एवं अंग्रेज साम्राज्यवाद के खिलाफ एक जीवन-प्रण संग्राम की वीरगाथा।

सबेरे आठ बजे हम सोनाखान पहुँचे। गांव के आम किसान उस समय खेत खलिहान चले गये थे। एक-दो आदमी चलते-फिरते नजर आये। उन्हें बुलाकर हमने उनसे पूछा वीर नारायणसिंह के बारे में हम जानकारी लेने आये हैं, क्या आप लोग हमें बता सकते हैं ? उनमें से एक ने कहा - क्यों नहीं- जरुर बतायेंगे। और, फिर इस बीच वहां पर लोग एकत्रित होने लगे। मैंने देखी वही भीड़। वही आँखें। गांव के लोग हमें वीर नारायण सिंह का जहां घर था, वहां ले गये। आज वहां पर सोनाखान के जमींदार का महल नहीं है किन्तु, वहां पर निशान के रुप में खंडहर बचा हुआ हैं। कुरुपाट पहाड़ के नीचे जंगल से लगा हुआ माई घर का खंडहर लबाई में १० हाथ एवं चौड़ाई में ६ हाथ है, बाजू में नीम और इमली के पुराने वृक्ष हैं जो आज भी खड़े हुए अपनी टहनियों को हिला कर हवाओं के द्वारा वीर नारायण सिंह का सन्देश सुना रहे हैं। माई घर के पूरब में १५ हाथ की दूरी पर वीर नारायण सिंह जमींदार के सोने, खाने, पहाने के कमरे हैं जो खंडहर के रुप में मौजूद हैं। इसकी लम्बाई २५ हाथ, चौड़ाई ६ हाथ है बाजू में आम, ईमली, कलमी के वृक्ष है, इसके पूरब में बैठक घर के खंडहर की लम्बाई ८ हाथ एवं चौड़ाई ६ हाथ है बाजू में कसही वृक्ष है।

सोनाखान जमींदार के महल का बस यही अवशेष है जो अब तक बचकर आज तक टिका हुआ है। ४९ गांव के जमींदार

का यही महल था ? मैंने गांव वालों के विचार जानने हेतु उनसे पूछा। गांव वाले तपाक से बोले- वह शोषण नहीं करते थे। उनका रहन-सहन सीधा था। इनका घर बांस का बना हुआ था जिसे छत्तीसगढ़ी में भदरो कहा जाता है। बांस की दीवारों में मिट्टी की छबाई की गई थी, छत खपरे की थी। मैंने फिर गांव के लोगों से प्रश्नों की बौछार शुरु कर दी। क्या आपको ४९ गांवों के नाम मालूम है ? रानी का नाम मालूम हैं ? गांव मे कोई १०० वर्ष का वृद्ध व्यक्ति जीवित हैं ? गांव वाले बोले- यह बात तो पुरानी हो गई है फिर भी कुछ खबर आपको फुलवाड़ी के जगपालसिंह से प्राप्त हो सकती है।

मैंने फिर प्रश्न किया- इस पहाड़ का क्या नाम हैं ? गांव के पश्चिम मे स्थित एक छोटा सा पहाड़। पहाड़ का नाम कुरूपाट डोंगरी है। यह वही डोंगरी है जहां वीर नारायण सिंह "कुरूंपाट देवता की पूजा करते थे"। कुरूंपाट की महत्व यह हैं कि वहां एक छोटी सी जगह पर बारहों महीने पानी मिलेगा। पहाड़ी के ऊपर कुरूंपाट के पास का वह स्थल बड़ा ही मनोरम, बड़ा सुन्दर है। कुरुपाट, बिझवार जमींदार के राज देवता हैं। गांव वालों ने बताया कि आज भी दशहरे उत्सव के दिन पुराने १८ गांव एवं नये बसे गांव के लोग कुरूंपाट में पूजा के लिए आते है। गांवों के नाम इस प्रकार है- (१) सोनाखान (२) महकम (३) बगला पाली (४) सारसडोल (५) सडी (६) बासोनपाली (७) नयागांव (८) देव राई (९) मीरगोंदा (१०) पठियापाली (नया) (११) बि कुली (१२) बनपिया (१३) चिखली (१४) सालिहामार (१५) जागीभाट (१६) कोहाकुड़ा (१७) चनहार (१८) भुसरीपाला (१९) कौसदी (२०) शुक्ला भाटा। ये गांव हैं- जिन गांव के आदिवासी किसान, नारायण सिंह की एक आवाज में जमा हो जाते थे। १८५६-५७ की महान क्रान्ति के दिनों में इन्ही १८ गांवों के किसानों ने अत्याचार सहे थे एवं प्रति रोध किया था। इन्ही १८ गांव के किसानों का खून सोनाखान के विस्तृत भूखण्ड में चू-चू कर गिरता रहा। बहादुर किसानों ने एक आजाद सोनाखान का स्वप्न देखा था एवं शोषक, अत्याचार हीन

समाज व्यवस्था की कल्पना की थी। क्या आज उन १८ गांवों के किसानों के स्वप्न साकार हो गये हैं ? क्या उन १८ गांवों में एक शोषणहीन समाज व्यवस्था स्थापित हो गई ? कुरुपाट के देवता के सामने दशहरा के दिन पूजा करते समय आज के किसान क्या एक शोषणहीन समाज की स्थापना के लिए शपथ लेते हैं ? बहुत सारे सवाल मेरे दिमाग में घूमते रहे।

कुरुपाट से देखो तो सोनाखान की पूरी बस्ती दिखाई देती है– सोनाखान के चारों ओर पहाड़ी ही नजर आती है। कुरुपाट डोंगरी के पश्चिम में लगा हुआ है पहाड़– सुपकोण एवं बहेरा खोल (खोल जंगल), सामने पूरब की ओर बिलाईगढ़ वन क्षेत्र, लामी डोंगरी, सराईपाली डोंगरी, काठाखलोया डोंगरी, मंझला मंडला और अन्य छोटे–छोटे पहाड़। किंवदन्तियां अनेकों हैं।

कुरुपाट डोंगरी में ही वीर नारायण सिंह ज्यादा समय रहते थे। उनके पास एक कबरा घोड़ा था। वो अक्सर घोड़े पर सवार होकर गांव-गांव घूमा करते थे। किसानों के दुख दर्द सुना करते थे, समस्याओ का हल बताते थे और उनकी यथाशक्ति मदद भी किया करते थे। आज भी बहुत से लोग कहते हैं कि उन्होंने अब भी वीर नारायण सिंह को कबरे घोड़ पर सवार होकर घूमते हुए देखा है। मैंने उन व्यक्तियों से पूछा – क्या तुममें से किसी ने नारायण सिंह को घोड़े पर सवार देखा है। 'नहीं हमन नई देखे हावन'। कुरुपाट डोंगरी वीर नारायण सिंह की गाथाओं का जिन्दा इतिहास है। एक जगह पर सरकारी विभाग द्वारा कुछ खुदाई हुई है। 'यहां मुरकुट्टी ढेंकी धलोक हावे' यह मुरकुट्टी ढेंकी क्या चीज है मैंने पूछा : इस पर उस वृद्ध ने जवाब दिया–

वीर नारायण सिंह डरपोक आदमी को सहन नहीं करते थे। और अगर कोई व्यक्ति क्रांतिकारी वीर के पास आकर रोना गाना करता था कि मुझे फलां बदमाश साहूकार ने सताया है, तो वे नाराज हो जाते थे एवं भुरकुट्टी ढेंकी में उसे सजा देते थे। और अगर कोई आकर उनसे ये कहता कि मैंने फलां बदमाश को मार

भगाया, या किसी अंग्रेज अफसर को चाटें रसीद करे हैं तो ये सुन कर नारायण सिंह खुश हो जाते और खुशी से उस आये हुए व्यक्ति की पीठ ठोंकते और इनाम भी देते थे। आज भी दशहरे के दिन वीर नारायण सिंह पहाड़ी से आवाज देते हैं। ग्रामवासियों के दिल में आज भी वीर नारायण सिंह जिन्दा है। विभिन्न प्रकार की किंवदन्तियां प्रचलित हैं।

कुर्रुपाट से देखने पर गांव एक तस्वीर जैसा नजर आता है। उत्तर पूर्व दिशा में दो बडे २ तालाब, एक का नाम राजासागर (४ एकड़) और दूसरा रानीसागर (३ एकड़) की भूमि में जल की लहरें अठखेलियां कर रही है। गांव के दक्षिण में एक और तालाब नन्दसागर है। यह तालाब भी वीर नारायण सिंह ने खुदवाया था। और इस तालाब के किनारे वीर नारायण सिंह ने खुद अपने हाथों से वृक्ष रोपण किये थें जो आज भी हमें, आम, नीम, आदि वृक्ष हरे भरे नजर आते हैं। राजा इसी तालाब में नहाया करते थे।

आज यहां बस्ती बनी हुई है। पुरानी बस्ती वहां नहीं थी। बस्ती तालाब से लगी हुई थी। महकम बस्ती एवं सोनखान बस्ती एक साथ लगी हुई थी। अंग्रेजों ने १८५७ के दिसम्बर महीने में इन्हीं दो बस्तियों के उपर हमला एवं अत्याचार किया था। यह इतिहास और वीर नारायणसिंह की वीरता पूर्ण संघर्ष का इतिहास, इतिहासकारों की विश्वासघातकता के बावजूद एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को मालूम होता रहा और यह सिलसिला शताब्दियों तक चलता रहेगा। अंग्रेजों ने इस बस्ती को तीनों ओर से घेरकर आग लगा दी थी और बस्ती के बच्चों को पकड़ पकड़ कर दहकते हुए अंगारों में डाल दिया था। अंधाधुंध गोली चलाकर सैंकडों लोगों को मौत के घाट उतार दिया था तथा बलात्कार जैसे कुकर्म भी करने से नहीं चुके। बस्ती खाली हो गई। गांव के लोग दूर दूर तक जंगल और पहाड़ों को पार करते हुए भाग खड़े हुए थे। परन्तु गांव के लोग उन अत्याचारों को महत्व नहीं देते हैं। वे वीर

नारायण सिंह के संघर्ष को ही याद करते हैं। ग्रामवासियों के आंसू सूख गये हैं। आज की पीढ़ियों में भी वह दुख, घृणा और गुस्से में परिवर्तित होकर रह गया है। फिर मौका आयेगा– फिर नारायण सिंह आयेगा, फिर संघर्ष शुरु होगा एवं विजय के बाद वीर नारायण सिंह का राज कायम होगा– एक शोषण अत्याचारहीन नया राज। आज वहां अंग्रेजी साम्राज्यवाद नहीं है। अंग्रेजी साम्राज्यवाद के मुनीम– कसडोल के साहूकार परिवार, जिनके पाग वीर नारायण सिंह अकाल के दिनों गरीब किसानों के लिए अनाज मांगने गये थे, जिन साहूकारों के खिलाफ वीर नारायण सिंह ने संघर्ष किया था, वही मिश्रा परिवार के लोग आज भी कालें अंग्रेजों की तरह है। साम्राज्मवाद के मुनीम बनकर कांग्रेसी राज्य चला रहे है। वही साहूकार परिवार के लोग आज भी राजसत्ता पर कब्जा किए हुए हैं। इन परिवार के लोगों ने वीर नारायण सिंह का नाम मिटा देने की जी तोड़ कोशिशें की। गांव के लोगों ने साहूकार परिवार के अत्याचारों से पीड़ित होकर फिर नारायणसिंह को याद किया। कुछ लोग ददरिया के सुर में गुनगुनाने लगे–

चना के खेत मा बटोर ढुल जाय ॥
सोनाखानिया के मारे मिसिर ढुल जाय ॥।

गाना गाने वाले को मिश्र परिवार के लोगों ने डरा धमका कर रोक दिया। नारायणसिंह से संबंधित गाना गाने से उन्हें मना कर दिया गया है। आम जनता को उनके संघर्ष की कहानी बताने पर रोक लगा दी गयी। फिर भी सोनाखान के बहादुर आज भी सामन्त शाही मशीनरी के लिए एक चैलेंज के रुप में खड़े हैं।

शोषक वर्ग आज भी सोनाखानियों की याद से कांप उठता है। १९६७ में जब उत्तरी बंगाल के नक्सलबाड़ि में जब वसन्त की बादर गूंज उठा। फिर यहां शोषक वर्ग कांप उठा। सोनाखान के बाजू में जांजगीर क्षेत्र के आदिवासी, हरिजनों का इलाका हैं। कुछ करना चाहिए, आग फिर भड़क सकती है। अभी से सम्हालो।

क्षेत्र में पानी की मांग पुरानी है। परन्तु नहीं– सोनाखान में नहीं। बहुत बार ग्रामवासियों की तरफ से मांग करने के बावजूद भी एक बांध के लिए सरकार ने दो लाख रुपया पास नहीं किया। नारायण सिंह के गांव से आज भी बदला लिया जा रहा है। परन्तु बाकी क्षेत्र में पानी के वन्दोवस्त के लिए प्लान बनाये जा चुके हैं। एस्टिमेटेड कास्ट १० करोड़ की जोंक नदो के डाईवर्सन स्कीम बनी। काम भी सन् ७० से चालू है। अभी तक डाईवर्सन क्यों नहीं बन पाया, मैंने अर्जुनी के एक ओवरसियर साहब से पूछा, तो उन्होंने कहा समूचे देश में लोग चुनाव के लिए व्यस्त हैं। इसलिये काम रुका हुआ है, और दो-तीन साल लग जायेगा। इसके पश्चात मैंने गाव क व्यक्तियों से पूछा इतने दिनों से डायवर्सन स्कीम बन नहीं पाई, गांव के लोग बोले जानवर की आड़ लेके बगुला चर जाते हैं।

यहां डाइवर्सन की आड़ लेके एस. डी. ओ., ओवरसियर चर खा रहे हैं। तिवारी साहब यही काम करावत करावत लाखों के पूंजी कमा डारिस कौन का करे सकही, कुछ बोलो तो काम ले निकाल देथे। मेरे पूछने पर कि क्यों अब तुम्हें जानवर मारने कि इजाजत नहीं है उन्होंने कहा कि जानवर मार नहीं सकते, नारायण सिंह के जमाने में जानवर मारने में कोई मनाही नहीं थी। नारायण सिंह खुद शिकार खेलते थे, पूरी वस्ती के लोग हांका में जाते थे। शिकार में जो भी प्राप्त होता था, उसमें हांका में जाने वाले व्यक्तियों का बराबर का हिस्सा होता था। भाटा जमीन में कोदो, कुटकी, खेराही (एक प्रकार का सांवा) जाति का अनाज आदि होना था। उड़द भी खूब होता था। नाला के बहाव वाले खेतों में धान की खेती की जाती थी। आदिवासी खेत में काम करते थे और अनाज उत्पादन करते थे। गाय, भैंस, बकरी आदि जानवरों का पालन पोषण करते थे।

वीर नारायण सिंह की जरुरत है क्या ? मेरे इस प्रश्न पर गांव वालों की आंखों में एक नई चमक उठी और कहने लगे हां अब हम नला वीर नारायण सिंह बने बर लगही। हमन एक्को दिन वीर नारायण सिंह बन जाबो। जंगल में एक पंछी फड़फड़ाते हुए बोल उठा टिं–टीं–टीं–टीं–टीं——।

मिसिर तोर का गति हो ही ।
सरकार तोर का गति हो ही ॥
वीर नारायण सिंह आही ।
वीर नारायण सिंह आही ॥

अर्जुनी ग्राम पार कर आप भुसरीपाली जायेंगे । भुसरी पाली के बाद सोनाखान । आज सोनाखान में ४०–४५ की एक बस्ती हैं, सामने कुरूंपाट डोंगरी और बाजू में जंगल । जंगल के बीच कल–कल बहती हुई जोंक नदी । जंगली जानवर आज भी हैं– सांभर, चितल, खरगोश, शेर, चीता, कोटरी और हां यहां आपको मयूर भी मिलेंगे जंगली जानवर के नाम पर । सोनाखान के पालतु जानवर बाकी छत्तीसगढ़ के पालतु जानवरों से अच्छी नर्स्ल के हैं । जंगली मे दूर-दूर तक हरी-हरी घांस नजर आती है । नारायण सिंह के पूर्वज गोड़ जाति के थे । बताया जाता हैं कि इनके पूर्वज सारंगढ़ के जमींदार के वंश के हैं । गोंड़ मारू के डर में इनके पूर्वजों ने गोंड़ से बिझवार जाति में जाति परिवर्तन किया । उन दिनों दिल्ली में पठानों का राज था । वर्तमान महाराष्ट्र के चांदा जिला से लेकर वर्तमान उड़ीसा के सम्बलपुर कालाहांडी गोड़वाना में आता था । जबलपुर मंडला के राज परिवार गोंड़ वंश का था । पठान सेना–पतियों ने चांदा जिला के कुछ गोंड़ राजाओं पर हमला कर दिया, बाद में गोंड़ राजाओं ने धर्म परिवर्तन कर ईस्लाम धर्म अपना लिया । उनके राज्यों के शासन का भार धर्म परिवर्तित गोंड़ों को वापिस कर दिया गया । मुसलमान बने हुए गोंड़ राजाओं के साथ गोंड़वाना के अन्य गोंडों की खूब दुश्मनी चली । धर्म परिवर्तित गोंड़ राजाओं ने उन दिनों खूब अत्याचार किए । धर्म परिवर्तित गोंड़ राजा उन दिनों 'गोंड़मारू' के नाम से विख्यात थे ।

बताया जाता है कि नारायण सिंह के पूर्वज सारंगढ़ में आए 'विशाही ठाकुर' सोनाखान जमींदारी वंश के पूर्वज थे । फते नारायण के समय में अंग्रेजों का कब्जा नहीं हो पाया था । नारायण सिंह के पिता का नाम राम राय था । नारायण सिंह के पास करीब ७० गांव का कब्जा था । उन गांवों के नाम इस प्रकार हैं–

१- उपरानी २- तिलाई पाली ३- दलदली ४- गिडोला ५- कासी पठार ६- खोकसा (खोसरा) ७- महराजी ८- महकोनी ९- नरधा १०- घोघरा ११- जकडी १२- अर्जुनी १३- सूखापाली १४- हरदी १५- मडला १६- तेंदूदहरा १७- गाड़ाडिह १८- सेहर-जोर १९- कासीवहार २०- घरजरा २१- वाराद्वार २२- बारानहिह २३- सोनाडिह २४- पचपेड़ो २५- वाहिमदा २६- दोरी २७- कुरु-भाटा २८- तनाई २९- तिवाली ३०- केरी पुवा ३१- परसकोल ३२- कोदोमाल ३३- घनोरा ३४- पुराई पाली ३५- देवगढ़ ३६- तेंदुचुवा ३७- जमघा ३८- देवपुर (छोटा) ३९- देवपुर (वड़ा) ४०- नवागांव ४१- सुफलापारा ४२- कारी ४३- नरी ४४- सराई पाल ४५- वघमला ४६- सिरमाल ४७- मलुवा (छोटा) ४८- मलुवा (बड़ा) ४९- चीता पडरिया इसके छोड़ बाकी १८ गांव और जिसका हम पहले उल्लेख कर चुके है वह भी सम्मिलित हैं।

अंग्रेजी साम्राज्यवाद देशी राजा व जमींदारों के ऊपर भरोसा नहीं कर पा रहा था। और वहीं तमाम राजाओं को दुश्मन बनाना चाहता था। साम्राज्यवाद एक नया चाल चला। एक नये देशद्रोही दलाल वर्ग को ढूंढ़ निकाला। यह वर्ग था महाजन वर्ग। साहूकार ने अंग्रेजो की मेहरबानी से समूचे देश में अपना जाल बिछा दिया। जमाखोरी, ब्याज का धन्धा आदि से यह साहूकार वर्ग के लोग दिन दुगुना रात चौंगुना बढ़ते गऐ। पहले गांव में अनाज जमा रहता था। परन्तु इन साहूकार वर्गों के चलते अनाज गायब होने लगा। सूखे की आड़ लेकर साहूकार वर्ग भयंकर शोषण करते थे। महाजन (साहूकार) वर्ग के आते ही गांव-गांव में अकाल पड़ने लगे। एवं गरीब किसान भूख से तड़फने लगे। कसडोल का मिश्र परिवार भी महाजन परिवार थे। महानदी के किनारे बसे कस्बे जैसे ग्राम कसडोल चारो तरफ से हरे भरे थे। ऊपरी भाग के मेहनती हरिजन (सतनामी) किसान जमीन में मेहनत कर सोना जैसे धान उगा रहे थे, दूसरी तरफ जंगली क्षेत्र में भोले भाले कंवर गोंड़ बिझवार, धनवार आदि आदिवासी जंगल की उपज और खेत खलिहान के धान आदि पर जिन्दा थे। दुर्गम होने के बावजूद भी

महाजन परिवार मिश्र के लोग इस क्षेत्र को खूब पसंद किया। महाजनी धंधा जोर से शुरु किया। ब्राम्हण होने के नाते इस परिवार को स्वीकृति मिली, इससे शोषण जाल फैलाने में इनको काफी मदद मिली उपज होते ही मिश्रा के आदमी सस्ती कीमत में अनाज खरीद लिया करते थे। इन्होंने ब्याज का धंधा चालू किया, बैल बर्तन एवं जमीन जायदाद भी गिरवी में रखकर चक्रवृद्धि ब्याज के धंधा के जरिये बहुत जल्द ही यह परिवार इस क्षेत्र में अव्वल नम्बर का शोषक बन गया।

१८५६ में उस क्षेत्र में भयंकर सूखे के कारण आकाल पड़ा। जंगल के जानवर भी सूखा पड़ने से जंगल छोड़कर भाग गये। पहाड़ी क्षेत्र में कंदमूल भी मिलना दूभर हो गया। सोनाखान राज के लोग अनाज के बिना त्राही त्राही करने लगे। सोनाखान में नारायणसिंह की बैठक में सब एकत्रित हुए और सब एक आवाज में बोल उठे "कैसे करें? गांव छोड़कर भाग जाए या दूसरा रास्ता भी है? छत्तीसगढ़ पर अंग्रेजों का कब्जा ३ साल पहले से चल रहा था। अंग्रेज कमिश्नर इलियेट ओर स्मिथ थे। कसडोल के मिश्र परिवार के उपर अंग्रेजों की कृपा दृष्टि थ। सोनाखान की बैठक में तय हुआ कि कसडोल के महाजन मिश्रा परिवार से कर्ज के अनाज मांगा जाय। कुछ ब्याज भी दिया जायेगा। वैसे बताया गया कि मिश्र परिवार के लोगों के मुंह से अकाल की समस्या देखते ही पानी निकल रहा था। अकाल की स्थिति में ज्यादा ब्याज व अधिक मुनाफे के लालच में, मिश्र परिवार ने नारायण सिंह की बात पर अनाज देने से साफ इंकार कर दिया। परंतु कोई हल नहीं निकला। महाजन के कोठे में रखा अनाज सूखने लगा और जनता का पेट भी बिना अन्न के सूखता रहा। सोनाखान स्थित नारायण सिंह की बैठक में गांव गांव के मुखिया जुटते गये। बातचीत चलती रही, नारायण सिंह बोले-नहीं, भूख से कोई आदमी नहीं मरेगा भले ही लड़ाई के मैदान में जूझते प्राण क्यों न चले जायें। नारायणसिंह ने उपस्थित लोगों से पूछा क्यों तुम लोग लड़ने तैयार हो या नही। जवाब में उपस्थित लोग एक

स्वर में बोल पड़े, लड़बोन–लड़बोन और ये आवाज इतनी तेज थी के सारे पहाड़ी इलाकों में तथा जंगलो में यही आवाज गुंजने लगी, तथा गांव गांव में पहुंचने लगी। लोग सोनाखान पहुंचने लगे। कुरूपाट में नारायण सिंह का डेरा था। कुरूपाट का पानी पीकर सरदारों ने शपथ ली कि अब हम साहूकारों को सहन नहीं करेंगे। साहुकारों की कोठी के अनाज में आदिबासी किसानों की मेहनत का खून लगा हुआ है। लहू पसीने की कमाई से पैदा हुआ अनाज महाजन की कोठी में भरा हुआ रहेगा और हम भूख से तड़फते रहेंगे, ये कभी नहीं हो सकता। नारायणसिंह की आवाज कुरूपाट में व आसपास के क्षेत्र में गूंजने लगी। लड़ेंगे कि नहीं एक बार फिर नारायण सिंह ने मुखिया साथियों से पूछा, सभी एक आवाज में चिल्ला उठे 'लड़बोन' और फिर जोश में आकर नारायण सिंह के नेतृत्व में लोग चल पड़े कसडोल की ओर। १८५६ का साल था नारायण सिंह अपने कबरे घोड़े पर सवार होकर नेतृत्व सम्हाला। लोगों के साथ नारायण सिंह कसडोल पहुंचे, फिर एक बार कसडोल के ब्राम्हणों से कर्ज के रूप में अनाज मांगा। मिश्रा लोग अंगूठा दिखा दिया। नारायण सिंह से अब सहा नहीं गया। कोठी के धान को नारायण सिंह ने जब्त कर लिया और ग्रामवासियों के बीच जरूरत के आधार पर बांट दिया। सन् १८५६ साल की यह घटना एक क्रांतिकारी घटना थी। आर्थिक मांगों पर अनाज के लिए संघर्ष की जो मिशाल छत्तीसगढ़ की दूर एवं दुर्गम गांवों में नारायण सिंह ने शुरू की उसकी मिसाल इतिहास में दुर्लभ हैं।

यह था जनता के लिए, जनता द्वारा संग्राम, जिसका नेतृत्व दिया था सोनाखान के आदिवासी नेता वीरनारायणसिंह ने। नारायणसिंह ने अंग्रेज शासकों को बाद में खबर भी दे दी। व्यापारी मिश्र ने भी अपनी क्षति का पत्र डिप्टी कमीश्नर को भेजा।

अंग्रेज कमिश्नर इलियट ने व्यापारी का भेजा हुआ शिकायत पत्र प्राप्त होते ही एक फौज की टुकड़ी के साथ नारायण सिंह के नाम से वारन्ट भेज दिया। परन्तु फौजी टुकड़ी धोखा देकर ही नारायण सिंह को रायपुर ले जाने में सफल हुई। १८५७ का

साल सारे देश में सिपाही गदर की आग जल रही थी। बंगाल की बैरकपूर से आग कीं चिनगारी भड़की। झांसी की रानी, तात्याटोपे, नाना साहेब आदि ने सिपाही गदर का नेतृत्व सम्हाला। रायपुर के जेल में बैठकर वीर नारायण सिंह का दिल भी इस गदर में भाग लेने के लिए- अंग्रेज साम्राज्यवाद को देश से भगाने के लिए आंदोलित हो उठा। वे मौका पाकर जेल से भाग निकले फिर सोनाखान। सोनाखान नाम इसलिए सोनाखान पड़ा क्योंकि सोनाखान की प्रवाहमान जोंक नदी एवं पहाड़ी नाले झरिया में सोने के कण मिलते हैं। सोनाखान नारायण सिंह के स्वप्न का सोनाखान, हम झरिया पार कर गजपालसिंह के डेरा पहुंचे।

नारायण सिंह को अनाज लूटने के आरोप में बन्दी बनाया गया था। सोनाखान चुप नहीं बैठा था। सोनाखान और १८ गांव के आदिवासी किसान गुस्से से तमतमाते रहे। जब नारायण सिंह आ गये तो गांव-गांव के आदिवासी अपने नेता को देखकर खुशी में दृढ़ निश्चय के साथ फिर संगठित हुए। विद्रोह का नगाड़ा गांव-गांव में बजने लगा।

बैठक हुई ; नारायण सिंह के नेतृत्व में लोगों ने अंग्रेज साम्राज्यवाद के खिलाफ फिर से संग्राम के लिये इरादा बनाया। सिपाही गदर के इतिहास में छत्तीसगढ़ भी जुड़ गया। छत्तीसगढ़ के इतिहास में आदिवासियों के टपकते खून का इतिहास, देश को मुक्त करने का इतिहास, मुक्ति संघर्ष की शुरुवात का इतिहास। अंग्रेज भी चुप नहीं बैठे। उन्होंने भी अपनी तैयारियां की। इतना बताकर गजपाल सिंह ने दम लिया। गजपाल सिंह लाल मुच्चु इतने में गुड़ की बनी हुई लाल चाय लेकर आये। मुच्चु नारायण सिंह का दूसरा लड़का गम्भीर सिंह का नाती है। अभी उमर करीब ६० साल है। मुच्चु जी ने हमें बताया कुछ कागजात हमारे पास हैं। वो एक टूटी हुई लकड़ी की पेटी लेकर आये। पेटी में दीमक लगी हुयी थी। हमने कुछ पुरानी चिट्ठियों की कापियां देखी। गजपाल सिंह तब तक भरमार बन्दूक नुमा लोहे की नली लेकर आये। यह बन्दूक थी..... इन बन्दूकों कों लेकर रवी नारायण सिंह

अंग्रेजों के साथ लड़ते रहे। कुरुपाट डोंगरी में चढ़कर जब तक वीर नारायण सिंह की फौज की बन्दूक गरजती रही, अंग्रेज फौज की टुकड़ी को बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा। 'और बन्दूकें नहीं है ? मैंने गजपाल सिंह से प्रश्न किया। गजपाल सिंह उत्तर में बोले कोई कोई गांव में होगी। कुछ बन्दूक की नली को तो बैलगाड़ी के एक्सिल के काम में भी लगाया गया है। सहदेव ने फिर प्रश्न किया 'बताईये लड़ाई की खबर।' लड़ाई के नाम से हमारे साथ बैठे ग्राम-वासियों की भीड़ की आंखें फिर चमक उठी। एक आदिवासी अधेड़ व्यक्ति (कंवर) बोल उठा, मैं बताऊंगा 'लड़ाई की कहानी' विभीषण बिना रावण को हराना मुश्किल था, उसी प्रकार जमींदार घरानों ने नारायण सिंह को दगा दिया। किसान युद्ध की पीठ में चाकू भोंका, एक मात्र सम्बलपुर के क्रांतिकारी सुरेन्द्र साय को छोड़ कर बाकी सभी जमीदारों ने अंग्रेजों का साथ दिया। नारायण सिंह के सगे बहनोई ने भी।

देवरी के जमींदार ने नारायण सिंह के सगे बहनोई होने के बावजूद भी अंग्रेजों का साथ दिया था। बिलासपुर के जमींदार ने फौज भेजकर अंग्रेजों की मदद की। भटगांव एवं बिलाईगढ़ के जमींदारों ने भी अंग्रेजों की विभिन्न प्रकार से मदद की। नारायण सिंह के एवं किसान युद्ध के दुश्मन ज्यादा ताकतवर नहीं थे, परन्तु जमींदारों के विश्वासघात के कारण इतने बड़े संघर्ष को पराजय झेलनी पड़ी। इस विश्वासघात का माकूल जवाब दिया गोविंद सिंह ने। वर्तमाल उड़ीसा में सम्वलपुर के महान क्रांतिकारी वीर सुरेन्द्र साय के मार्गदशन एवं फौजी सहायता से बलवान होकर वीर बाप के बेटे गोविन्द सिंह ने गद्दारी का बदला लिया। देवरी के जमींदार महाराज साय की गर्दन तलवार की एक वार से काट दी मैंने फिर पूछा– 'क्या नारायण सिंह के साथ कसडोल के ब्राम्हणों की कोई व्यक्तिगत दुश्मनी थी ?' गजपाल सिंह बोले– 'कौन जानता है क्या था ? पर उसकी बात बिल्कुल सत्य है कि अकाल पीड़ित किसानों के लिए अनाज दिलाने हेतु संघर्ष में उन्होंने पहले नेतृत्व दिया था। जेल तोड़ने के पश्चात वीर नारायण सिंह ने सिपाही गदर के समय एक तरफ अंग्रेजों का राज खत्म करने का विचार ठान लिया था।

साथ-साथ साहूकार वर्ग के खिलाफ, तीव्र घृणा के कारण, कोटगढ़ एवं खरौंद आकर मिश्र परिवार के लोगों को खत्म कर नये संघर्ष की शुरुवात की थी। सिर्फ बच गई थी मिश्र परिवार की एक गर्भवती महिला और साथ में उसका एक पुत्र।

साथी सहदेव ने फिर पूछा– 'कुरुपाट की आखरी लड़ाई का क्या हुआ ?' उदास होकर मुच्चु बोला– अंग्रेज सिपाहियो के साथ लड़ते लड़ते वीर नारायण सिंह की गोला–बारुद खतम हो गई। अ धुनिक शस्त्रों के साथ देशाती शस्त्रों का मुकाबला न हो सका। वीर नारायण सिंह पकढ़े गये। उनको पकड़ कर एक साथी के साथ अंग्रेज लोग उनके ही कबरे घोड़े में बैठाकर रायपुर ले गये। सोनाखान गांव को जनशून्य बना दिया गया। नारायण सिंह के परिवार के लोग, गोविन्दसिंह की ससुराल के गांव वर्तमान उड़ीसा के पदमपुर की तरफ निकल पड़े। अर्जुनी, चंदेली डोंगरी होकर पूरे परिवार ने बिलाईगढ़ के जगल का रास्ता पकड़ा। लामी डोंगरी, सलिहा, विजय नगर परसापाली फिर ठारघाट डोंगरी पार कर काट खलोया डोंगरी, मझला डोंगरी, बेलारी डोंगरी पार किया एवं बसना की सड़क पकड़ी फिर और दो पहाड़ फाग डोंगरी और रगमतिया डोंगरी होते हुए बाम्हन डोंगरी के पास गोलमर्रा के पास डेरा डाला। गोलमर्रा उस समय फुलझर जमींदारी में आता था। बिझवार जमींदार परिवार का दुख देख कर फुलझर जमींदार ने उन्हें गोलमर्रा में गुजर-बसर करने के लिए माफी जमीन के रुप में जीने खाने के लायक जमीन दी।

इसके बाद हमें मुच्चु और गजपाल सिंह को लेकर गोलमर्रा की ओर जाना था। सोना झरिया को पार कर बस्ती वालों से बिदा लेकर हम लोग क्रांति वीर नारायण सिंह के गांव सोनाखान से बिदा लिये।

चलते चलते मैंने गजपालसिंह से प्रश्न किया 'सोनाखान में कब से सोना पाया जाता है ?' गजपाल सिंह उत्तर में बोले– यह भी तो बहुत दिन की बात है। अपनी वंशावली का एक कागज आपको गोलमर्रा में दिखाऊंगा जिसमें लिखा है कि सोनाखान गांव

का पुरातन नाम सिंघगढ़ था। सिंघगढ़ से सिंहखान एवं वर्तमान में सोनाखान बना। वंशावली पत्र में यह भी है कि बिझवार खानदान के दो राजपुत्र रोजगार की तलाश में देश भ्रमण करने निकले। पहले फुलझर उड़ीयान में रहे। उस समय रतनपुर के हैहय राजाओं की शान की बात सुनकर हैहय राज दरबार रतनपुर में गये। राजा बहादूर ने मुलाकात करने के बाद उन राजपुत्रों को नौकरी में रख लिया, प्रशन ठाकुर फुलझर में रह गये। विशाही ठाकुर रतनपुर के हैहय राजा के साथ ही रहे। यह १५४९ ईसवीं की घटना है। विशाही ठाकुर एक कटार से तीन बाघ मारे थे। गढ़मला के युद्ध में बहादुरी दिखाई थी जिससे खुश होकर हैहय राजा ने बिशाही ठाकुर को लवन इलाके में जागीर दी। बिशाही ठाकुर के बाद लुकार बरिहा, फिर सन्धिराय बरिहा, फिर धनऊ बरिहा एवं माधो बरिहा हुए। जब माधो बरिहा ने लोहे की जंजीर को एक हाथ से तोड़ दिया तो हैहय राजा ने उन्हें एक तालुका दिया। जिसके बाद १६६३ ईसवीं में इन्हें ८४ गांवों का दीवान बना दिया गया। फिर आते हैं– (६) बघन बरिहा (७) मुरारी बरिहा (८) सिंधराय बरिहा (९) गजप्रताप बरिहा। ये सब ८४ गांवों के दीवान थे। इनको दीवान सम्बन्धीगढ़ के नाम से जाना जाता था।

फिर आये फत्तेसिंह (१०) फत्तेसिंह दीवान (११) चन्द्रसाय दीवान (१२) ख्दसाय दीवान (१३) दलसाय दीवान (१४) रामसाय दीवान। रामसाय दीवान वीर नारायण सिंह के पिता थे। उन्होंने भी 'खैर-खवाई' के लिए अंग्रेजों के साथ लड़ाई की थी।

"सबब खालत फिरंगी घर पाये तीन खून माफ पाये"

रातों रात सफर कर जब हम रायपुर पहुचे तों सुर्योदय की लालिमा पूर्व गगन में उदित हो रही थी। सूरज की किरण जय स्तम्भ चौक के उपर पड़ी। इसी जय स्तम्भ के पास ही नारायण सिंह का उबलता हुआ गरम खून गिरा था, देश की मुक्ति के लिये। आज यह जनपथ है, रोज लाखों लोग आना जाना करते हैं। क्या? ये सब लोग शहीद वीर नारायण सिंह के खून सिंचित कुर्बानी के रास्ते में चल रहे हैं!

आज भी हमनला वीर नारायण सिंह बनेबर लगही

आज से १३६ साल पहले सन् १८५६ का समय। छत्तीसगढ़ में भयानक अकाल पड़ा था। साहूकार किसानों का सारा अनाज हड़प कर बैठे थे। चारों तरफ हाहाकार मचा था। सोनाखान से आदिवासी जमींदार, आदिवासी किसानों के प्यारे नेता वीर नारायण सिंह ने किसानों को संगठित किया। साहूकारों के घरों से अनाज जब्त करके किसानों में बांट दिया गया। अंग्रेजों की साहूकारों से सांठगांठ थी, अंग्रेज सरकार ने वीर नारायण सिंह को रायपुर जेल में बंद कर दिया। एक साल बाद, १८५७ में, अंग्रेजों के खिलाफ पूरे देश में आजादी की लड़ाई छिड़ी हुयी थी। वीर नारायण के कानों में बंदूक की आवाज पहुंची और वह जेल से भाग निकले। जब नारायण सिंह आ गये तो गांव-गांव के आदिवासी किसान दृढ़ निश्चय के साथ फिर संगठित हुये। वीर नारायण सिंह ने संघर्ष का मोर्चा सम्हाला। लेकिन साहूकारों और दलाल जमींदारों ने गद्दारी की। संघर्ष कुचल दिया गया। वीर नारायण सिंह को १९ दिसम्बर १८५७ के दिन अंग्रेज सरकार ने गोलियों से भून डाला। पीड़ित जनता और देश की आजादी के लिए, सामंती शोषण और साम्राज्यवाद के खिलाफ लड़ते-लड़ते वीर नारायणसिंह शहीद हो गरे।

अंग्रेजों ने वीर नारायण सिंह को एक लुटेरा और डाकू बताया। १९७९ तक शहीद वीर नारायण सिंह का नाम इतिहास के अंधेरे में छुपा हुआ था। १९७९ में का० शंकर गुहा नियोगी के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ माईन्स श्रमिक संघ वीर नारायण सिंह की वीरता व कुर्बानी के इतिहास को उजाला में लाये, ताकि शोषित जनता को उनकी राह पर चलने को प्रेरणा मिले।

नारायण सिंह के शहादत के ९० वर्ष बाद अंग्रेज भारत छोड़ कर चले गए। लेकिन जिस आजादी के लिए नारायण सिंह और लाखों शहीदों ने आत्म बलिदान दिये, वह आजादी नहीं आयी।

८५ करोड़ जनता की जन्म भूमि भारत, प्राकृतिक सम्पदायों से भरपूर भारत दुनियां का सबसे बड़ा गरीब देश है। हमारे देश में ७० प्रतिशत लोग गरीबी रेखा के नीचे जीवन जीते हैं। उनको रोटी–कपड़ा–मकान–शिक्षा-स्वास्थ्य के अधिकार नहीं मिले हैं। देश की ५० करोड़ जनता निरक्षर हैं। अशिक्षा–अज्ञानता के बल पर जनता को धर्म के नाम पर बांटा जा रहा है, ताकि वे रोजी–रोटी का संघर्ष न छेड़ सके। आजादी के ४५ साल बाद भी हमारा भारत देशी-विदेशी लुटेरों के चारागाह बनकर रह गया है। देश के तथाकथित विकास से टाटा–बिड़ला–गोयंका–रिलायंस–मोदी और अमरीकी, जर्मन, जपानी, अंग्रेज आदि देशों के पूंजीपतियों का मुनाफा की तिजोरी भरती गयी और लाभवान हुये नौकरशाही व बड़े जमींदार। देश पर आज विदेशी कर्ज का बोझ २ लाख करोड़ रुपये, कर्ज का ब्याज चुकाने के लिए हर साल और ज्यादा कर्ज लेना पड़ता है। विश्व बैंक व अंतःराष्ट्रीय मुद्रा कोष के निर्देशानुसार हमारे देश की आर्थिक, वाणिज्य व उद्योगनीतियां तय होती हैं। उन्हीं के दबाव में रुपए का मूल्य घटाया जाता हैं, खाद की कीमत, पेट्रोल–डीजल–बिजली की कीमत बढ़ाया जाता है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को लुट की खुली छूट दी जा रही। श्रम-आधारित उद्योगों को खत्म करके विदेशी तकनीक से बडे बड़े निजी उद्योग लगा रहे हैं। सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगों का निजीकरण हो रहा है। नये रोजगार तो दूर की बात, नई नीति के तहत करोड़ों श्रमिक बेरोजगार हो रहे हैं।

जिस प्रांत में वीर नारायण सिंह देशी विदेशी शोषण के खिलाफ संघर्ष छेड़े थे, उस प्रांत की, छत्तीसगढ़ की स्थिति और भी दयनीय है। अपार खनिज, वन व जल सम्पदाओं से भरपूर छत्तीसगढ़ आज भी देशी-विदेशी शोषकों का चारागाह बना हुआ है। जल, जंगल, जमीन पर जनता का अधिकार नहीं है। "धान के कटोरा" छत्तीसगढ़ बराबर के लिए अकाल ग्रस्त है। एक तरफ छत्तीसगढ़ के सारी नदियों के पानी और खनिज सम्पदाओं को हड़प कर भिलाई कोरबा के बड़े–बड़े उद्योग चलते हैं, दूसरी ओर बेरोजगारी–भूखमरी' से त्रस्त लाखों किसान हर साल छत्तीसगढ़ से

पलायन कर रहे हैं। भिलाई इस्पात कारखाने से छत्तीसगढ़ की जनता लाभवान नहीं हुयी, लाभवान हुए सिम्प्लेक्स, बी.ई.सी. बी. के. आदि निजी उद्यागपति और नौकरशाही व विदेशी शक्तियां। बैलाडीला के लोहा-पत्थर जापान को समृद्ध-शाली बनाता है। एक ओर लाखों नवजवान बेरोजगार हैं, दूसरी ओर उद्योगों से मजदूरों की छंटनी कर विदेशी मशीन लगाने का सिलसिला जारी है। आज विदेशी तकनीक से टाटा-बिड़ला-मोदी-लार्सन टुब्रों-डायकेम आदि जिन नये उद्योगों को लगा रहे हैं. वे भी मशीन आधारित होंगें वहां लोगों को रोजगार कम ही मिलेगा।

पिछले १५ साल, का. नियोगी के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ के मेहनतकश वीर नारायणसिंह की राह पर चलते आये हैं, सामंती शोषण, पूंजीवादी शोषण और साम्राज्यवादी शोषन के खिलाफ लड़ते आये हैं। छत्तीसगढ़ की मुक्ति के खातिर अपने खून बहाते आये हैं। दल्लीराजहरा में जिस लड़ाई की शुरुआत आज उस लड़ाई व्यापक रुप मे चल रही है भिलाई में इस महा संघर्ष के चलते का० नियोगी खुद भी अपनी जान कुरबान कर दिये।

शहीद वीर नारायण जिन शोषणों के विरुद्ध लड़ते हुये शहोद हो गये, उन साम्राज्यबादी सामंतवादी शोषण की जंजीर आज भी हैं हमारे देश पर, हमारे प्रांत पर। और इसलिये आज भी जरुरत हैं वीर नारायण सिंह की, आज भी 'हमनला बीर नारा यण सिंह बने बर लगही।' मजदूर-किसान देशप्रेमी जनता व्यापक एकता कायम कर वीर नारायण सिंह की राह पर चलेंगे, शोषण के खिलाफ संघर्ष तेज करेंगे, तब सिर्फ तब पूरा हो पायेगा वीर नारा-यण सिंह का सपना, वीर नियोगी का सपना। साकार होगा हमारा सपना के छत्तीसगढ़, शोषण हीन छत्तीसगढ़।

लोक साहित्य परिषद नियोगी जी के लेख "आज की पीढ़ी और वीर नारायण सिंह की वसीयत" का पुनः मुद्रण कर रही है, ताकि वीर नारायण संघर्षशील जनता का प्रेरणा स्रोत बना रहे।

लाल जोहार–

१९ दिसम्बर, १९९२ प्रकाशक

सोनाखान की धरती

घने जंगल, भरे नाले, कड़ी चट्टान की धरती
लहू की, आग की, ये बिल्पवी तुफ़ान की धरती
यहीं स्वाधीनता के युद्ध के मैदान की धरती
अमर बलिदान की धरती, ये सोनाखान की धरती

सुनो, वह कह रही है आज भी तलवार की बातें
कि अपनी कोख से बहती लहू की धार की बातें
दमन, शोषण, बरीबी और अत्याचार की बातें
शहीदों की चिताओं में दबे अंगार की बातें

शुरु से आन पर मरती हुई अभिमान की धरती
तड़पती है अभी तक यह नये अरमान की धरती
किसानों की भुजाओं में बसी यह धान की धरती
नये संघर्ष की है यह सही पहचान की धरती

किसी दिन फिर यहीं से ही नया इतिहास बोलेगा
हमारी बन्द आंखों में नया आकाश खोलेगा
उगेगा फिर नया सूरज इसी की बन्द मुट्ठी से
यहां के खण्डहरों में फिर नया मधुमास बोलेगा

हमें फिर से बुलाती है ये सोनाखान की धरती
दबे इन्सान की, लेकिन बड़े ईमान की धरती
यही है वीर नारायण के उस बलिदान की धरती
शहीदों के अमर संघर्ष, गौरव-गान की धरती

इसी के कोख से जन्मा कभी था वीर नारायण
बना था आप का गोला अंधेरा चीर नारायण
हमेशा तोड़ता था जुल्म की जंजीर नारायण
किसानों की धधकती क्रांति की तस्वीर नारायण

उसी की याद में रोती सोनाखान की धरती
प्रथम स्वाधीनता के युद्ध के मैदान की धरती
लहू की, आग की, ये बिल्पवी तुफान की धरती
अमर बलिदान की धरती, ये सोनाखान की धरती

हरि ठाकुर